INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

सत्यमेव जयते
BPSC

LATEST EDITION

## HINDI MEDIUM

Golden Edition

HANDWRITTEN NOTES

# BPSC
## (PRE+MAINS)

**ACHIEVE YOUR DREAM THROUGH SELF STUDY WITH INFUSION NOTES**

BASED ON NEW EXAM PATTERN

## PART-6 सामान्य हिंदी

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

# BPSC

## PRE + MAINS

BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION

भाग – 6

## सामान्य हिंदी

# प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**BPSC (Bihar Public Service Commission) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **बिहार लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**संयुक्त राज्य / अपर अधीनस्थ सेवा (PCS)**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/**

**अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/**


**प्रकाशकः**

**INFUSION NOTES**

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com



Whatsapp करें - https://wa.link/gubxrj

Online Order करें - https://bit.ly/42AN5s2


| | |
|---|---|
| मूल्य : ₹ | संस्करण : नवीनतम (2023) |

# सामान्य हिंदी


| | | |
|---|---|---|
| 1. | संधि एवं संधि विच्छेद | 1 |
| 2. | समास एवं समास विग्रह | 20 |
| 3. | उपसर्ग एवं प्रत्यय | 38 |
| 4. | संज्ञा | 54 |
| 5. | सर्वनाम | 60 |
| 6. | विशेषण | 62 |
| 7. | क्रिया | 65 |
| 8. | लिंग | 67 |
| 9. | वचन | 69 |
| 10. | काल | 72 |
| 11. | पर्यायवाची शब्द | 75 |
| 12. | विलोम शब्द | 81 |
| 13. | समश्रुत भिन्नार्थक शब्द | 92 |
| 14. | शब्द-युग्म | 94 |
| 15. | वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द | 105 |
| 16. | शब्द शुद्धि | 115 |
| 17. | वाक्य शुद्धि | 122 |
| 18. | वाक्य रचना एवं वाक्यों के प्रकार तथा पदबंध | 129 |
| 19. | मुहावरे | 135 |


INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

| | | |
|---|---|---|
| 20. | कहावत / लोकोक्ति | 143 |
| 21. | संक्षिप्तीकरण | 150 |
| 22. | निबंध लेखन | 154 |

## अध्याय – 1

## संधि एवं संधि विच्छेद

**परिभाषा :-** दो वर्णों के परस्पर मेल से उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहते है अर्थात् प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दुसरे का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन करते हैं । उसे संधि कहते हैं ।

**संधि** – 1.आदेश :- किसी वर्ण के स्थान पर कोई दुसरा वर्ण आ जाये तो ,

जगत्+ईश = जगदीश

वाक्+ईश = वागीश

2. आगम – अनु+छेद = अनुच्छेद

च्

3. लोप – अतः+एव = अतएव

4. प्रकृतिभाव - मनः+कामना = मनःकामना

**संयोग** – प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दुसरे शब्द का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में कोई परिवर्तन नहीं कर पाए तो उसे संयोग कहते हैं ।

उदाहरण : - युग + बोध = युगबोध

संधि के भेद – संधि के तीन भेद होते हैं

स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

**स्वर संधि** – दो स्वरों के परस्पर मेल को संधि कहते हैं ।

**स्वर संधि पाँच प्रकार की होती है :-**

1.दीर्घ स्वर संधि
2.गुण स्वर संधि
3.वृद्धि स्वर संधि
4.यण् स्वर संधि
5. अयादि स्वर संधि

हिंदी में अ, आ, इ, ई , उ , ऊ , ए , ऐ , ओ , औ , ऋ , कुल 11 स्वर होते हैं ।

1. **दीर्घ स्वर संधि** - यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर ( अ , इ , उ ) के बाद समान ह्रस्व (अ , इ , उ) या दीर्घ स्वर आये तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं ।

उदा.

| |
|---|
| अ/आ +अ/आ = आ |
| इ/ई + इ/ई = ई |
| उ/ऊ + उ /ऊ = ऊ |

**(1).अ +अ =आ**

अंत्य + अक्षरी = अंत्याक्षरी

अंध + अनुगामी = अंधानुगामी

अधिक + अंश = अधिकांश

अधिक + अधिक = अधिकाधिक

अस्त + अचल = अस्ताचल

आग्नेय + अस्त्र = आग्नेयास्त्र

उत्तर + अधिकार = उत्तराधिकार

उदय + अचल = उदयाचल

उप + अध्याय = उपाध्याय

उर्ध्व + अधर = उर्ध्वधर

ऊह + अपोह = ऊहापोह

काम + अयनी = कामायनी

गत + अनुगतिक = गतानुगतिक

गीत + अंजलि = गीतांजलि

छिद्र + अन्वेषी = छिद्रान्वेषी

जठर + अग्नि = जठराग्नि

जन + अर्दन = जनार्दन

तथ्य + अन्वेषण= तथ्यान्वेषण

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

तीर्थ + अटन = तीर्थाटन

दाव + अनल = दावानल

दीप + अवली = दीपावली

दाव + अग्नि = दावाग्नि

देश + अंतर = देशांतर

न्यून + अधिक = न्यूनाधिक

पद + अवनत = पदावनत

पर + अधीन = पराधीन

प्र + अंगन = प्रांगण

प्र + अर्थी = प्रार्थी

भग्न + अवशेष = भग्नावशेष

***अ + आ = आ***

आम + आशय = आमाशय

गर्भ + आधान = गर्भाधान

अन्य + आश्रित = अन्याश्रित

गर्भ + आशय = गर्भाशय

आर्य + आवर्त = आर्यावर्त

फल + आहार = फलाहार

कंटक + आकीर्ण = कंटकाकीर्ण

छात्र +आवास = छात्रावास

कुश + आसन = कुशासन

जन + आकीर्ण = जनाकीर्ण

खग + आश्रय = खगाश्रय

जना +देश =जनादेश

गमन + आगमन = गमनागमन

भय + आक्रान्त = भयाक्रांत

भय + आनक = भयानक

पित्त + आशय = पित्ताशय

धर्म + आत्मा = धर्मात्मा

भ्रष्ट + आचार = भ्रष्टाचार

मेघ + आलय = मेघालय

लोक + आयुक्त = लोकायुक्त

विरह + आतुर = विरहातुर

विवाद + आस्पद = विवादास्पद

शत + आयु =  शतायु

शाक + आहारी = शाकाहारी

शोक + आतुर = शोकातुर

सत्य + आग्रह = सत्याग्रह

सिंह + आसन = सिंहासन

स्थान + आपन्न = स्थानापन्न

हिम + आलय = हिमालय

जल + आशय = जलाशय

पंच + आयत = पंचायत

***आ + अ = आ***

क्रिया + अन्वयन = क्रियान्वयन

मुक्ता + अवली = मुक्तावली

तथा + अपि = तथापि

रचना + अवली = रचनावली

दीक्षा + अंत = दीक्षांत

विद्या + अर्जन = विद्यार्जन

द्राक्षा + अरिष्ट = द्राक्षारिष्ट

श्रद्धा + अंजलि = श्रद्धांजलि

द्राक्षा + अवलेह = द्रक्षावलेह

सुधा + अंशु =  सुधांशु

स्त्री + उपयोगी = स्त्र्युपयोगी

**ई + ऐ = यै**

देवी + ऐश्वर्य = देव्यैश्वर्य

**उ + अ = व**

अनु +अय = अन्वय

तनु + अंगी = तन्वंगी

परमाणु + अस्त्र = परमाण्वस्त्र

मधु + अरि = मध्वरि

मनु + अंतर = मन्वंतर

सु + अल्प = स्वल्प

सु + अस्ति = स्वस्ति

**उ + आ = वा**

गुरु + आदेश = गुर्वादेश

मधु + आचार्य = मध्वाचार्य

साधु + आचरण = सध्वाचरण

साधु + आचार = साध्वाचार

सु + आगत = स्वागत

**उ + इ = वि**

अनु + इष्ट = अन्विष्ट

अनु + इति = अन्विति

धातु + इक = धात्विक

**उ + ई = वी**

अनु + ईक्षण = अन्वीक्षण

अनु + ईक्षा = अन्वीक्षा

**उ + ए = वे**

अनु + एषण = अन्वेषण

अनु + एषक = अन्वेषक

**उ + ओ = वो**

लघु + ओष्ठ = लघ्वोष्ठ

**ऊ + अ = व**

वधू + अर्थ = वध्वर्थ

**ऊ + आ = वा**

वधू + आगमन = वध्वागमन

**ऋ + असमान स्वर = र् + अन्य स्वर**

**ऋ+ अ = र**

पितृ + अनुमति = पित्रनुमति

**ऋ + आ = रा**

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

पितृ + आदेश = पित्रादेश

मातृ + आनंद = मात्रान्नद

मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा

**ऋ + इ = रि**

पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा

मातृ + उपयोगी = मात्रुपयोगी

**ऋ + ए = रे**

पितृ + एषणा = पित्रेषणा

मातृ + एषणा = मात्रेषणा

पुत्र + एषणा = पुत्रेषणा

5. अयादि स्वर संधि : -

ए / ऐ = अय् / आय्

ओ / औ = अव् / आव्

**नियम** : - यदि ए , ऐ , ओ ,औ के बाद कोई भी स्वर आए तो 'ए' के स्थान पर 'अय्' तथा 'ऐ' के स्थान पर 'अय्' तथा ओ के स्थान पर 'अव्' व 'औ' के स्थान पर 'आव्' हो जाता है।

**ए + असमान स्वर = आय् + अन्य स्वर**

**ए+ अ = अय**

चे + अन = चयन

ने + अन = नयन

शे + अन = शयन

संचे + अ = संचय

**ऐ + अ = आय**

गै + अक = गायक

गै + अन = गायन

नै + अक = नायक

नै + इका = नायिका

दै + इनी = दायिनी

दै + अक = दायक

विनै + अक = विनायक

शै + अक = शायक

**ओ + अ = आव**

ओ + अ = अवि

ओ + इ = अवी

गो + अक्षि / अक्ष = गवाक्ष

गो + ईश = गवीश

गो + य = गव्य

पो + अन = पवन

भो + अन = भवन

हो + अन = हवन

**औ + अ = आव**

पौ + अन = पावन

भौ + अ = भाव

भौ + अक = भावक

भौ + अना = भावना

शौ + अक = शावक

**औ + इ = आवि**

शौ + अ=इक = शाविक

**औ + उ = आवु**

भौ + उक = भावुक

**(2). व्यंजन संधि**

व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने पर उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे व्यंजन संधि कहतेहैं ।

नियम : - यदि किसी अघोष व्यंजन( वर्ग का पहला व दूसरा वर्ण ) के बाद कोई घोष व्यंजन ( वर्ग का तीसरा , चौथा , पांचवा , वर्ण तथा य ,र, ल,व ,ह (अंत:स्थ वर्ण ) या कोई स्वर आये तो वर्ग का पहला वर्ण , तीसरे वर्ण में बदल जाता है ।

जैसे : - क् → ग्

च् → ज्

ट् + घोष वर्ण → ड्

त् → द

प् → ब

षट् + आनन = षडानन

षट् + दर्शन = षड्यंत्र

**उदाहरण :-**

दिक् + अम्बर = दिगंबर

दिक् + अंत = दिगंत

दृक + अंचल = दृग्गचल

वाक् + ईश = वागीश

प्राक् + ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक

| | | |
|---|---|---|
| नीलकंठ | - | नीला हैं कंठ जो (कर्मधारय) नीला कंठ है जिसका - शिवजी (बहुव्रीहि) |
| घनश्याम | - | घन के समान श्याम (कर्मधारय) |
| घन के समान श्याम है जो | - | कृष्ण (बहुव्रीहि ) |
| चन्द्रमुख | - | चन्द्र के समान मुख (कर्मधारय) |
| चन्द्र के समान है मुख जिसका | - | कार्तिकेय (बहुव्रीहि ) |
| दशानन | - | दस आनन (मुख) (द्विगु) दस मुख है जिसके अर्थात् रावण (बहुव्रीहि ) |
| षडानन | - | छः आनन (मुख) (द्विगु) छः मुख है जिसके अर्थात् कार्तिकेय(बहुव्रीहि ) |
| लंबोदर | - | लम्बा है जो उदर (कर्मधारय) लंबा है उदर (पेट)जिसका-गणेश (बहुव्रीहि) |
| महात्मा | - | महान है जो आत्मा (कर्मधारय) महान है आत्मा जिसकी (बहुव्रीहि) |
| त्रिनेत्र | - | तीन नेत्रों का समूह (द्विगु) तीन नेत्र है जिसके अर्थात् शिव (बहुव्रीहि) |
| चतुर्भुज | - | चार भुजाओं का समूह (द्विगु) चार भुजाएं हैं जिसकी अर्थात् विष्ण (बहुव्रीहि) |
| चतुर्मुख | - | चार मुखों का समूह (द्विगु) चार मुख है जिसके अर्थात् ब्रह्मा (बहुव्रीहि) |

# अध्याय-3

## उपसर्ग एवं प्रत्यय

- **संस्कृत उपसर्ग** : - संस्कृत व्याकरण में 22 उपसर्ग होते हैं |

1. **अति :- (** अधिक , परे )

**बिना** संधि – अतिक्रमण , अतिशय , अतिसार , अतिमानव , अतिव्याप्ति |

**दीर्घ संधि के उदा. – अतीन्द्रिय** ,अतीत , अतीव ( अति +इव)

यण् संधि के उदा.- अत्यंत (अति +अंत ), अत्यल्प (अति+अल्प), अत्युक्ति (अति +उक्ति )|

**प्रत्यय से सम्बन्धित**- अतिशयिक , आतिरेक्य ( अति + रेक + य – प्रत्यय ) आत्यंतिक |

2. **अधि :- (ऊपर , अधिक )**

**बिना संधि –** अधिकरण , अधिगम, अधित्यका , अधिनायक , अधिनियम (अधि + नि +यम ),अधिपति , अधिमास , अधिराज , अधिशासी , अधिसूचना |

**दीर्घ संधि –** अधीक्षण (अधि +ईक्षण ), अधीन (अधि+इन ) , अधीश (अधि +ईश )|

**यण् संधि –** अध्ययन (अधि+अयन ), अध्यापक ,अध्याय |

**व्यंजन संधि –** अधिष्ठाता (अधि+स्थाता ),अधिष्ठान (अधि +स्थान )

**प्रत्यय से सम्बंधित –** आधिकारिक (अधिकार+इक ),आधिपत्य , आध्यात्मिक (अध्यात्म +इक )|

3. **अभि :- ( सामने , पास )**

**निर्गुण** , निर्जल , निर्दिष्ट (निर्+दिष्ट), निर्दोष , निर्निमेष , निर्बल , निर्भीक(निर्+भीक ), निर्मम , निर्माता(निर् +माता), नियति , निर्वाचन(निर्+वाचन ) निर्वाह , निर्विरोध ।

**निर (निर्+स्वर )** – निरंकुश (निर्+अंकुश), निरंजन (निर्+अंजन =बिना कालिख या दोष ) , निरंतर , निरतिशय , निरनुनासिक (निर्+अनु +नासिक ), निरभिमान , निरभीलाष, निरभ्र (निर्+अभ्र = बिना बदल के ), निरवलम्ब (निर्+अव +लम्ब ), निरस्त , निराकरण(निर्+आ+करण ), निराकार (निर्+आ +कार), निरादर (निर्+आ+दर), निरापद (निर्+आ+पद ), निरामय , निरामिष , निराश्रय , निरीक्षक , निरीह (निर्+ईह ), निरुक्त (निर्+उक्त ), निरुत्साह (निर्+उद्+साह ), निरुपम , निरुपाय (निर्+उप+आय)।

**व्यंजन संधि** :- निर्णय (निर्+नय), निर्माण (निर्+मान)

**18. दुस्** :- **(**कठिन, बुरा , विपरित)-

**दुस् – (**दुस्+ त ,स )- दुस्तर (दुस् +तर), दुस्साह , दुस्साध्य(दुस्+साध्य ), दुस्साहस , दुस्स्वप्न ।

**दुः - दुःसह ,** दुःसाहस , दुःस्वप्न , दुःशासन , दुःशील ।

**दुश्** – दुस् + तालव्य अघोष व्यंजन (च , छ , श )

**दुश्शासन** ( दुस्+शासन ), दुश्शील(दुस्+शील )।

**दुष् – (दुस्**+क , प , फ )- दुष्कर (दुष्कर - दुस्+कर ), दुष्कर्म (दुस्+कर्म ),

दुष्काल, दुष्कृत्य (दुस्+कृत्य), दुष्परिणाम (दुस्+परि +नाम), दुष्प्रयोग , दुष्प्रहार (दुस्+प्र +हार), दुष्प्राप्य (दुस् + प्र + आप्य), दुष्फल (दुस्+फल )।

**19. निस्** :- (बड़ा , विशेष , विपरित )

**निस् – (निस्+अघोष दन्त्य व्यंजन (त , स )**

निस्तारण , निस्तेज (निस्+तेज ), निस्संकोच (निस्+सम्+कोच ), निस्संदेह (निस्+सम्+देह ), निस्सार , निस्सीम , निस्स्वार्थ ।

**निः** - निःसार , निःसीम , निःस्वार्थ ।

**निश् –** ( निस्+ अघोष तालव्य व्यंजन (च , छ , श )।

निश्चय (निस्+चय ), निश्चल , निश्चिंत , निश्चित , निश्छल , निश्शुल्क (निस्+शुल्क ), निश्श्वास (निस्+श्वास) ।

निष् :- (निस्+क,प,फ)

निष्कंटक (निस्+कंटक), निष्काम (निस्+काम ), निष्कासन (निस्+कासन ), निष्फल (निस्+फल ), निष्पक्ष (निस्+पक्ष ), निष्पत्ति (निस्+पत्ति) , निष्प्रभ (निस्+प्र +भा = चमक)।

प्रत्यय संबंधित : - नैयामिक (नि+ आय+इक) , नैष्क्रमण (निस्+क्रमण +अ) ।

**20. उद् – ( ऊपर , श्रेष्ट )**

**बिना संधि** – उद्घाटन (उद्+घाटन), उद्घोष(उद्+घोष), उद्घोषणा (उद्+घोषणा ),उद्दंड (उद्+दंड), उद्देश्य (उद्+देश्य ), उद्धत(उद्+हत), उद्धरण (उद्+हरण), उद्धृत (उद्+हृत उद्बोधन (उद्+बोधन ), उद्भव (उद्+भव), उद्भेदन , उद्यम (उद्+यम)।

**उत् (उद्+अघोष व्यंजन )**- उत्कंठा (उद्+कंठा ), उत्कर्ष (उद्+कर्ष ), उत्कृष्ट (उद्+कृष्ट ) , उत्खनन (उद्+खनन ), उत्तम (उद्+तम) , उद्गार (उद्+गार ), उत्ताप (उद् +ताप ) , उत्तीर्ण (उद्+तीर्ण), उत्तुंग , उत्तेजित , उत्सर्ग , उत्सव , उत्साह ।

**खोरः**

जमा – जमाखोर

आदम – आदमखोर

चुगल – चुगलखोर

मुफ़्त – मुफ्तखोर

रिश्वत – रिश्वतखोर

**गरः**

कार – कारीगर

जादू – जादूगर

नील – नीलगर

बाजी – बाजीगर

**गारः**

रोज – रोजगार

काम – कामगार

खिदमत – खिदमतगार

गुनाह – गुनाहगार

मदद – मददगार

याद – यादगार

**दारः**

खुशबू – खुशबूदार

चमक – चमकदार

जमा – जमादार

जमीन – जमींदार

तहसील – तहसीलदार

थाना – थानेदार

दुकान – दुकानदार

**नाकः**

खतरा – खतरनाक

खौफ – खौफनाक

दर्द – दर्दनाक

शर्म – शर्मनाक

**बाज :**

चाल – चालबाज

दगा – दगाबाज

धोखा – धोखेबाज

नशा – नशेबाज

नक्शा – नक्शेबाज

# अध्याय – 4

## संज्ञा

**संज्ञा की परिभाषाः-**

संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी विशेष वस्तु, भाव और जीव के नाम का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं

दूसरे शब्दों में- किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं ।

जैसे – प्राणियों के नाम- मोर, घोड़ा, अनिल, किरण जवाहरलाल नेहरू आदि ।

वस्तुओं के नाम- अनार ,रेडियों , किताब, संदूक, आदि ।

स्थानों के नाम- कुतुबमीनार , नगर, भारत, मेरठ आदि

भावों के नाम- वीरता , बुढ़ापा, मिठास आदि

यहाँ 'वस्तु ' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है, जो केवल वाणी और प्रदार्थ का वाचक नहीं ,वरन उनके धर्मो का भी सूचक हैं।

साधारण अर्थ में 'वस्तु ' का प्रयोग इस अर्थ में नही होता। अतः वस्तु के अंतर्गत प्राणी, प्रदार्थ और धर्म आते हैं। इन्हीं के आधार पर संज्ञा के भेद किये गये हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के पाँच भेद होते है-

(1)व्यक्तिवाचक (Proper noun )

(2)जातिवाचक (Common noun)

(3)भाववाचक (Abstract noun)

(4)समूहवाचक (Collective noun)

(5)द्रव्यवाचक (Material noun

**(1)व्यक्तिवाचक संज्ञा** :-जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं ।

जैसे-

व्यक्ति का नाम-रवीना , सोनियां गाँधी , श्याम, हरि, सुरेश , सचिन आदि ।

वस्तु का नाम- कर , टाटा चाय, कुरान , गीता ,रामायण आदि ।

स्थान का नाम-ताजमहल, कुतुबमीनार , जयपुर आदि ।

दिशाओं के नाम- उत्तर , पश्चिम , दक्षिण , पूर्व ।

देशों के नाम- भारत , जापान , अमेरिका, पाकिस्तान , बर्मा ।

राष्ट्रीय जातियों के नाम- भारतीय , रूसी, अमेरिकी।

समुन्द्रों के नाम- काला सागर , भूमध्य सागर , हिन्द महासागर , प्रशान्त महासागर।

नदियों के नाम- गंगा, ब्रह्मपुत्र, बोल्गा, कृष्णा कावेरी , सिन्धु ।

पर्वतों के नाम- हिमालय, विन्ध्याचल, अलकनंदा, कराकोरम ।

नगरों चोको और सड़कों के नाम वाराणसी , गया,चाँदनी चौक, हरिसन रोड़, अशोक मार्ग ।

पुस्तकों तथा समाचारों के नाम- रामचरित मानस, ऋग्वेद , धर्मयुग, इण्डियन नेशन, आर्यावर्त ।

ऐतिहासिक युद्धों और घटनाओं के नाम- पानीपत की पहली लड़ाई, सिपाही -विद्रोह, अक्तूबर -क्रांति ।

दिनों महीनों के नाम- मई, अक्टूबर ,जुलाई, सोमवार , मंगलवार ।

त्योहारों उत्सवों के नाम- होली, दीवाली, रक्षाबन्धन, विजयादशमी ।

(2) **जातिवाचक संज्ञा** :- जिस शब्द से एक जाति के सभी प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

बच्चा , जानवर , नदी, अध्यापक, बाजार , गली, पहाड़, खिड़की, स्कूटर आदि शब्द एक ही प्रकार प्राणी, वस्तु और स्थान का बोध करा रहे हैं। इसलिए ये जातिवाचक संज्ञा' हैं।

जैसे - लड़का, पशु-पक्षियों वस्तु , नदी , मनुष्य, पहाड़ आदि।

'लड़का' से राजेश, सतीश, दिनेश आदि सभी 'लड़कों का बोध होता है।

'पशु-पक्षियों से गाय, घोड़ा, कुत्ता आदि सभी जाति का बोध होता है।

'वस्तु' से मकान, कुर्सी, पुस्तक, कलम आदि का बोध होता है।

'नदी' से गंगा यमुना, कावेरी आदि सभी नदियों का बोध होता है।

'मनुष्य' कहने से संसार की मनुष्य-जाति का बोध होता है।

'पहाड़' कहने से संसार के सभी पहाड़ों का बोध होता हैं।

**(3) भाववाचक संज्ञा:-**

थकान, मिठास, बुढ़ापा, गरीबी , आजादी , हँसी , चढ़ाई, साहस,

वीरता आदि शब्द-भाव, गुण, अवस्था तथा क्रिया के व्यापार का बोध करा रहें हैं।

इसलिए ये 'भाववाचक संज्ञाएँ हैं।

इस प्रकार-जिन शब्दों से किसी प्राणी या पदार्थ के गुण, भाव, स्वभाव या अवस्था का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

**जैसे-** उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि । इन उदाहरणों में 'उत्साह' से मन का भाव है। 'ईमानदारी' से गुण का बोध होता है। 'बचपन' जीवन की एक अवस्था या दशा को बताता है। अतः उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि शब्द भाववाचक संज्ञाए हैं। हर प्रदार्थ का धर्म होता है। पानी में शीतलता, आग में गर्मी, मनुष्य में देवत्व और पशुत्व इत्यादि का होना आवश्यक है। पदार्थ का गुण या धर्म प्रदार्थ से अलग नही रह सकता। घोड़ा है, तो उसमें बल है, वेग है और आकार भी है। व्यक्तिवाचक संज्ञा की तरह भाववाचक संज्ञा से भी किसी एक ही भाव का बोध होता है। 'धर्म, गुण, अर्थ और 'भाव' प्रायः पर्यायवाची शब्द हैं। इस संज्ञा का अनुभव हमारी इन्द्रियों को होता है और प्रायः इसका बहुवचन नहीं होता।

**भाववाचक संज्ञाएँ बनाना:-**

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम और अव्यय शब्दों से बनती हैं। भाववाचक संज्ञा बनाते समय शब्दों के अंत में प्रायः पन, त्व, ता आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

**(I) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाना:-**

| जातिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा | जातिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|---|---|
| स्त्री- | स्त्रीत्व | भाई- | भाईचारा |

### (2) विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनानाः-

| विशेषण | भाववाचक संज्ञा | विशेषण | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|---|---|
| लघु- | लघुता, लघुत्व, लाघव | वीर- | वीरता, वीरत्व |
| एक- | एकता, एकत्व | चालाक- | चालाकी |
| ख़ट्टा- | खटाई | गरीब | गरीबी |
| गंवार | गंवारपन | पागल | पागलपन |
| बूढा | बुढ़ापा | मोटा | मोटापा |
| नबाव | नबावी | दीन | दीनता,दैन्य |
| बड़ा | बड़ाई | सुंदर | सौंदर्य, सुंदरता |
| भला | भलाई | बुरा | बुराई |
| ढीठ | ढिठाई | चौड़ा | चौड़ाई |
| लाल | सरलता सारल्य | आवश्यकता | आवश्यकता |
| परिश्रमी | परिश्रम | अच्छा | अच्छाई |
| गंभीर | गंभीरता, गांभीर्य | सभ्य | सभ्यता |
| स्पष्ट | स्पष्टता | भावुक | भावुक |
| अधिक | अधिकता, आधिक्य | अधिक | अधिकता |
| सर्द | सर्दी | कठोर | कठोरता |
| मीठा | मिठास | चतुर | चतुराई |
| सफेद | सफेदी | श्रेष्ठ | श्रेष्ठता |
| मूर्ख | मूर्खता | राष्ट्रीय | राष्ट्रीयता |
| खोजना | खोज | सीना | सिलाई |
| जीतना | जीत | रोना | रुलाई |
| लड़ना | लड़ाई | पढ़ना | पढ़ाई |
| चलना | चाल, चलन | पीटना | पिटाई |
| देखना | दिखावा, दिखावट | समझना | समझ |

| जातिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा | जातिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|---|---|
| मनुष्य- | मनुष्यता | पुरुष- | पुरुषत्व, पौरुष |
| शास्त्र- | शास्त्रीयता | जाति- | जातीयता |
| पशु- | पशुता | बच्चा- | बचपन |
| दनुज- | दनुजता | नारी- | नारीत्व |
| पात्र- | पात्रता- | बूढा- | बुढ़ापा |
| लड़का- | लड़कपन | मित्र- | मित्रता |
| दास- | दासत्व | पण्डित- | पण्डिताई |
| अध्यापक- | अध्यापन | सेवक- | सेवा |

| | | | |
|---|---|---|---|
| सींचना | सिंचाई | पड़ना | पड़ाव |
| पहनना | पहनावा | चमकना | चमक |
| लूटना | लूट | जोड़ना | जोड़ |
| घटना | घटाव | नाचना | नाच |
| बोलना | बोल | पूजना | पूजन |
| झूलना | झूला | जोतना | जुताई |
| कमाना | कमाई | बचना | बचाव |
| रुकना | रुकावट | बनना | बनावट |
| मिलना | मिलावट | बुलाना | बुलावा |
| भूलना | भूल | छापना | छापा, छपाई |
| बैठना | बैठक, बैठकी | बढ़ना | बाढ़ |
| घेरना | घेरा | छींकना | छींक |

# अध्याय – 8

## लिंग

लिंग शब्द का अर्थ होता हैं चिन्ह या पहचान । व्याकरण के अन्तर्गत लिंग उसे कहते है, जिसके द्वारा किसी विकारी शब्द के स्त्री या पुरुष जाति का होने का बोध होता हैं ।

प्रकारः हिन्दी भाषा में लिंग दो प्रकार के होते हैं -

i. पुल्लिंग
ii. स्त्री लिंग

i. **पुल्लिंगः** जिसके द्वारा किसी विकारी शब्द की पुरुष जाति का बोध होता हैं, उसे पुल्लिंग कहते हैं । जैसे - गोविन्द, अध्यापक, मेरा, काला , जाता ।

ii. **स्त्रीलिंगः** जिसके द्वारा किसी विकारी शब्द की स्त्री जाति का बोध होता हैं, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं । जैसे - सीता, अध्यापिका, मेरी काली, जाती।

लिंग की पहचानः लिंग की पहचान शब्दों के व्यवहार से होती हैं । कुछ शब्द सदा पुल्लिंग रहते हैं तो कुछ शब्द सदा स्त्रीलिंग । कुछ शब्द परम्परा के कारण पुल्लिंग या स्त्री लिंग में प्रयुक्त होते हैं ।

### I. पुल्लिंग संज्ञा शब्दों की पहचान

i. प्राणीवाचक पुल्लिंग संज्ञाएः पुरुष, आदमी, मनुष्य, लड़का, शेर, चीता, हाथी, कुत्ता, घोड़ा, बैल, बन्दर, पशु, खरगोश, गैण्ड़ा, मेंढ़क, साँप, मच्छर, तोता, बाज, मोर, कबूतर, कौवा, उल्लू, खटमल, कछुआ ।

ii. अप्राणीवाचक पुल्लिंग संज्ञाएः- निम्न संज्ञाएं सदैव पुल्लिंग में ही प्रयुक्त होती है।

(अ) पर्वतों के नामः हिमालय, विन्ध्याचल, अरावली, कैलाश, आल्पस ।

(आ) महीनों के नामः भारतीय महीनों तथा अंग्रेजी महीनों के नाम

जैसे - चैत, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, मार्च

(इ) दिन या वारों के नामः सोमवार, मंगलवार, शनिवार ।

(ई) देशों के नामः भारत, अमेरिका, चीन, रूस, फ्रांस, इण्ड़ोनेशिया, (अपवाद) श्रीलंका (स्त्रीलिंग)

(उ) ग्रहों के नामः सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, शुक्र, राहु, केतु, अरुण, वरुण, यम, अपवाद (पृथ्वी)

(ऊ) धातुओं के नामः सोना, तांबा, पीतल, लोहा, अपवाद (चाँदी)

(ए) वृक्षों के नामः नीम, बरगद, बबूल, आम, पीपल, अशोक, अपवाद (इमली)

(ऐ) अनाजों के नामः चावल, गेहूं, बाजरा, जौं, अपवाद (ज्वार)

(ओ) द्रव प्रदार्थों के नामः तेल, घी, दूध, पर्वत , मक्खन, पानी, अपवाद, (लस्सी, चाय)

(औ) समय सूचक नामः क्षण, सेकण्ड़, मिनट, घण्टा, दिन, सप्ताह, पक्ष, माह, अपवाद (रात, सांय, सन्ध्या, दोपहर,)

(क) वर्णमाला के वर्णः स्वर तथा क से ह तक व्यंजन, अपवाद (इ, ई, ऋ)

(ख) समुद्रों के नामः हिन्द महासागर, प्रशान्त महासागर

(ग) मूल्यवान पत्थर, रत्नों के नाम,ः हीरा, पुखराज, नीलम, पन्ना, मोती, माणिक्य, अपवाद (मणि, लाल)

(घ) शरीर के अंगों के नामः सिर, बाल, नाक, कान, दाँत, गाल, हाथ, पैर, ओंठ, मुंह, अपवाद (गर्दन, जीभ, अंगुली)

(च) देवताओं के नामः इन्द्र, यम, वरुण, ब्रह्मा, विश्णु, महेश

(छ) आपा, आव, आवा, आर, अ, अन, ईय, एरा, त्व, दान, पन, य, खाना वाला आदि प्रत्यय युक्त शब्द । यथा - बुढ़ापा, चुनाव, पहनावा, सुनार, न्याय, दर्शन, पूजनीय, चचेरा, देवत्व, फूलदान, बचपन, सौन्दर्य, डाकखाना, दूधवाला ।

(ज) ख,ज,न,त्र के अन्तवाले शब्दः जैसे सुख, जलज, नयन, शस्त्र ।

### 2. स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों की पहचानः

(क) तिथियों के नामः प्रथमा, द्वितीया, एकादशी, अमावस्या, पूर्णिमा ।

(ख) भाषाओं के नामः हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, जापानी, मलयालम ।

(ग) लिपियों के नामः देवनागरी, रोमन, गुरुमुखी, अरबी, फारसी ।

(घ) बोलियों के नामः ब्रज, भोजपुरी, हरियाणवी, अवधी ।

(च) नदियों के नामः गंगा, गोदावरी, व्यास, ब्रह्मपुत्र ।

(छ) नक्षत्रों के नामः रोहिणी, अश्विनी, भरणी ।

(ज) देवियों के नामः दुर्गा, रमा, उमा ।

(अ) महिलाओं के नामः आशा, शबनम, रजिया, सीता ।

(ट) लताओं के नामः अमर बेल, मालती, तोरई ।

(ठ) आ, आई, आइन, आनी, आवट, आहट, इया, ई, त, ता, ति, आदि प्रत्यय युक्त शब्द ।

यथा - छात्रा, मिठाई, ठकुराइन, नौकरानी, सजावट, घबराहट, गुड़िया, गरीबी, ताकत, मानवता, नीति ।

**<u>लिंग परिवर्तन</u>**

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के कतिपय नियम

1. शब्दान्त 'अ' को 'आ' में बदलकर ।

छात्र - छात्रा

पूज्य - पूज्या

सुत - सुता

वृद्ध - वृद्धा

भवदीय - भवदीया

अनुज - अनुजा

2. शब्दान्त 'अ' को 'ई' में बदलकर

देव-देवी

पुत्र-पुत्री

गोप-गोपी

ब्राह्मण- ब्राह्मणी

मेंढ़क-मेंढ़की

दास-दासी

3. शब्दान्त 'आ' को 'ई' में बदलकर

नाना-नानी

लड़का - लड़की

घोड़ा - घोड़ी

बेटा - बेटी

रस्सा - रस्सी

चाचा - चाची

4. शब्दान्त 'आ' को 'इया' में बदलकर

बूढ़ा - बूढ़िया, चूहा - चुहिया, कुत्ता - कुतिया

डिब्बा - डिबिया, बेटा-बिटिया, लोटा-लुटिया

5. शब्दान्त प्रत्यय 'अक' को 'इका' में बदलकर

बालक-बालिका

लेखक- लेखिका, नायक - नायिका

पाठक - पाठिका, गायक - गायिका, विधायक - विधायिका

6. 'आनी' प्रत्यय लगाकर

देवर - देवरानी, चौधरी - चौधरानी, सेठ - सेठानी

भव- भवानी, जेठ - जेठानी

7. 'नी' प्रत्यय लगाकर

शेर - शेरनी, मोर-मोरनी, जाट-जाटनी, सिंह-सिंहनी, ऊँट-ऊँटनी

भील - भीलनी

8. शब्दान्त में 'ई' के स्थान पर 'इनी' - लगाकर -

हाथी - हथिनी, तपस्वी, तपस्विनी, स्वामी - स्वामिनी

9. 'इन' प्रत्यय लगाकर

माली-मालिन, चमार-चमारिन, धोबी-धोबिन

नाई-नाइन, कुम्हार-कुम्हारिन, सुनार-सुनारिन

10. 'आइन' प्रत्यय लगाकर

चौधरी-चौधराइन, ठाकुर-ठकुराइन, मुंशी-मुंशियाइन

11. शब्दान्त 'वान' के स्थान पर 'वती' लगाकर

गुणवान - गुणवती, पुत्रवान-पुत्रवती, भगवान- भगवती

बलवान- बलवती, भाग्यवान - भाग्यवती, सत्यवान-सत्यवती

12. शब्दान्त 'मान' के स्थान पर 'मती' लगाकर

श्रीमान्-श्रीमती, बुद्धिमान् - बुद्धिमती, आयुष्मान - आयुष्मती

13. शब्दान्त 'ता' के स्थान पर 'त्री' लगाकर

कर्ता-कर्त्री, नेता-नेत्री, दाता-दात्री

# अध्याय – 17

## वाक्य-शुद्धि

शब्द शुद्धि के साथ वाक्य शुद्धि का भी भाषा में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। वाक्य में अनावश्यक शब्द प्रयोग से, अनुपयुक्त शब्द के प्रयुक्त होने से, सही क्रम या अन्विति न होने से, लिंग, वचन, कारक का सही प्रयोग नहीं होने से, सही सर्वनाम एवं क्रिया का प्रयोग न होने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है। जो अर्थ के साथ भाषा सौन्दर्य को हानि पहुंचाता है।

### 1. अनावश्यक शब्द के कारण वाक्य अशुद्धि :

समान अर्थ वाले दो शब्दों या विपरीत अर्थ वाले शब्दों के एक साथ प्रयोग होने तथा एक ही शब्द की पुनरावृत्ति पर वाक्य अशुद्ध हो जाता है। अतः किसी एक अनावश्यक शब्द को हटाकर वाक्य शुद्ध बनाया जा सकता है। इनमें दोनों शब्दों में से किसी एक को हटाना होता है। अतः दोनों रूपों में वाक्य सही हो सकता है। यहाँ एक रूप ही देंगे।

| अशुद्ध वाक्य | शुद्ध वाक्य |
|---|---|
| 1. मैं प्रातः काल के समय पढ़ता हूँ। | 1. मैं प्रातः काल पढ़ता हूँ। |
| 2. जज ने उसे मृत्यु दण्ड की सजा दी। | 2. जज ने उसे मृत्यु दण्ड दिया। |
| 3. इसके बाद फिर क्या हुआ ? | 3. इसके बाद क्या हुआ ? |
| 4. यह कैसे सम्भव हो सकता है ? | 4. यह कैसे संभव है ? |
| 5. मेरे पास केवल मात्र एक घड़ी है। | 5. मेरे पास केवल एक घड़ी है। |
| 6. तुम वापस लौट जाओ। | 6. तुम वापस जाओ। |
| 7. सारे देश भर में यह बात फैल गई। | 7. सारे देश में यह बात फैल गई। |
| 8. वह सचिवालय कार्यालय में लिपिक है। | 8. वह सचिवालय में लिपिक है। |
| 9. विन्ध्याचल पर्वत हिमालय से प्राचीन है। | 9.विन्ध्याचल हिमालय से प्राचीन है। |
| 10. नौजवान युवक युवतियों को आगे आना चाहिए। | 10. नौजवानों को आगे आना चाहिए। |
| 11. किसी और दूसरे से परामर्श लीजिए। | 11. किसी और से परामर्श लीजिए। |
| 12. सप्रमाण सहित उत्तर दीजिए। | 12. सप्रमाण उत्तर दीजिए। |
| 13. गुलामी की दासता बुरी है। | 13. गुलामी बुरी है। |
| 14. प्रशान्त बहुत सज्जन पुरुष है। | 14. प्रशान्त बहुत सज्जन है। |
| 15. शायद आज वर्षा अवश्य आयेगी। | 15. शायद आज वर्षा आयेगी। |
| 16. शायद वह जरूर उत्तीर्ण हो जायेगा। | 16. वह जरूर उत्तीर्ण हो जायेगा। |
| 17. कृपया शीघ्र उत्तर देने की कृपा करें। | 17. कृपया शीघ्र उत्तर दें। |
| 18. वह गुनगुने गरम पानी से नहाता है। | 18. वह गुनगुने पानी से नहाता है। |
| 19. गरम आग लाओ। | 19. आग लाओ। |
| 20. तुम सबसे सुन्दरतम हो। | 20. तुम सबसे सुन्दर हो। |

### 2. अनुपयुक्त शब्द के कारण :

वाक्य में अनुपयुक्त शब्द प्रयुक्त हो जाने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है अतः अनुपयुक्त शब्द हटाकर उस स्थान पर उपयुक्त शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

**अशुद्ध वाक्य** **शुद्ध वाक्य**

| | |
|---|---|
| 1. सीता राम की स्त्री थी। | 1. सीता राम की पत्नी थी। |
| 2. रातभर गधे भौंकते रहे। | 2. रातभर कुत्ते भौंकते रहे। |
| 3. कोहिनूर एक अमूल्य हीरा है। | 3. कोहिनूर एक बहुमूल्य हीरा है। |
| 4. बन्दूक एक शस्त्र है। | 4. बन्दूक एक अस्त्र है। |
| 5. आकाश में तारे चमक रहे हैं। | 5. आकाश में तारे टिमटिमा रहे हैं। |
| 6. आकाश में झण्डा लहरा रहा है। | 6. आकाश में झण्डा फहरा रहा है। |
| 7. उसकी भाषा देवनागरी है। | 7. उसकी लिपि देवनागरी है। |
| 8. वह दही जमा रही है। | 8. वह दूध जमा रही है। |
| 9. साहित्य व समाज का घोर संबंध है। | 9. साहित्य व समाज का घनिष्ठ संबंध है। |
| 10. उसके गले में बेड़ियाँ पड़ गई। | 10. उसके पैरों में बेड़ियाँ पड़ गई। |
| 11. हाथी पर काठी बाँध दो। | 11. हाथी पर हौदा रख दो। |
| 12. चिन्ता एक भयंकर व्याधि है। | 12. चिन्ता एक भयंकर आधि है। |
| 13. गगन बहुत ऊँचा है। | 13. गगन बहुत विशाल है। |
| 14. वह पाँव से जूता निकाल रहा है। | 14. वह पाँव से जूता उतार रहा है। |
| 15. कृपया मेरी सौभाग्यवती कन्या के विवाह में पधारें। | 15. कृपया मेरी सौभाग्याकांक्षिणी कन्या के विवाह में पधारें। |
| 16. उसे अपनी योग्यता पर अहंकार है। | 16. उसे अपनी योग्यता पर गर्व है। |
| 17. राष्ट्रपति ने पुरस्कार भेंट किए। | 17. राष्ट्रपति ने पुरस्कार प्रदान किए। |
| 18. कृष्ण ने कंस की हत्या की। | 18. कृष्ण ने कंस का वध किया। |
| 19. विख्यात आतंकवादी मारा गया। | 19. कुख्यात आतंकवादी मारा गया। |

**3. <u>लिंग सम्बन्धी</u> :**

वाक्य में प्रयुक्त शब्द के अनुसार उचित लिंग का प्रयोग न होने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

| **अशुद्ध वाक्य** | **शुद्ध वाक्य** |
|---|---|
| 1. यह एकांकी बहुत अच्छी है। | 1. यह एकांकी बहुत अच्छा है। |
| 2. मेरे मित्र की पत्नी विद्वान है। | 2. मेरे मित्र की पत्नी विदुषी है। |
| 3. मीरां एक प्रसिद्ध कवि थी। | 3. मीरां एक प्रसिद्ध कवयित्री है। |
| 4. बेटी पराये घर का धन होता है। | 4. बेटी पराये घर का धन होती है। |
| 5. सत्य बोलना उसकी आदत था। | 5. सत्य बोलना उसकी आदत थी। |
| 6. बुआजी आप क्या कर रहे हैं? | 6. बुआजी आप क्या कर रही हैं? |
| 7. आत्मा अमर होता है। | 7. आत्मा अमर होती है। |
| 8. सेनापति को प्रणाम करनी पड़ती है। | 8. सेनापति को प्रणाम करना पड़ता है। |
| 9. ब्रह्मपुत्र असम में बहता है। | 9. ब्रह्मपुत्र असम में बहती है। |

# अध्याय – 22

## निबंध लेखन

**निबंध के 4 अंग होते हैं**

1. **शीर्षक** : निबंध में हमेशा शीर्षक आकर्षक होना जरूरी है। शीर्षक पढ़ने से लोगों में उत्सुकता ज्यादा होती है।
2. **प्रस्तावना**: निबंध में सबसे श्रेष्ठ प्रस्तावना होती है, भूमिका नाम से भी इसे जाना जाता है । निबंध की शुरुआत में हमें किसी भी प्रकार की स्तुति , श्लोक या उदाहरण से करते हैं तो उसका अलग ही प्रभाव पड़ता है।
3. **विषय विस्तार** – निबंध में विषय विस्तार का सर्व प्रमुख अंश होता है, इसके अंदर तीन से चार अनुच्छेदों को अलग-अलग पहलुओं पर विचार प्रकट किया जा सकता है। निबंध लेखन में इसका संतुलन होना बहुत ही आवश्यक है। विषय विस्तार में निबंधकार अपने दृष्टिकोण को प्रकट करते हुए बता सकता है ।
4. **उप संहार** – उप संहार को निबंध में सबसे अंत में लिखा जाता है। पूरे निबंध में लिखी गई बातों को
5. हम एक छोटे से अनुच्छेद में बता सकते हैं। इसके अंदर हम संदेश , उपदेश , विचारों या कविता की पंक्ति के माध्यम से भी निबंध को समाप्त कर सकते हैं ।

**निबंध के प्रकार**

निबंध तीन प्रकार के होते हैं विषय के अनुसार

1. **वर्णनात्मक** – सजीव या निर्जीव पदार्थ के बारे में जब हम निबंध लेखन करते हैं तब उसे वर्णनात्मक निबंध कहते हैं। यह निबंध लेखन स्थान , परिस्थिति , व्यक्ति आदि के आधार पर निबंध लिखा लिखा जाता है ।

- **प्राणी**

1. **श्रेणी**
2. **प्राप्ति स्थान**
3. **आकार प्रकार**
4. **स्वभाव**
5. **विचित्रता**
6. **उपसंहार**

- **मनुष्य**

1. **परिचय**
2. **प्राचीन इतिहास**
3. **वंश परंपरा**
4. **भाषा और धर्म**
5. **सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन**

- **स्थान**

1. **अवस्थिति**
2. **नामकरण**
3. **इतिहास**
4. **जलवायु**
5. **शिल्प**
6. **व्यापार**
7. **जाति धर्म**
8. **दर्शनीय स्थान**
9. **उप संहार**

**2.विवरणात्मक** – ऐतिहासिक , पौराणिक या फिर आकस्मिक घटनाओं पर जब हम निबंध लेखन लिखते हैं उसे विवरणात्मक निबंध कहते हैं । यह निबंध लेखन यात्रा , मैच , ऋतु आदि पर लिख सकते हैं।

- **ऐतिहासिक**

1. **घटना का समय और स्थान**
2. **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि**
3. **कारण और फलाफल**
4. **इष्ट अनिष्ट और मंतव्य**

- **आकस्मिक घटना**

1. **परिचय**
2. **तारीख, स्थान और कारण**
3. **विवरण और अंत**
4. **फलाफल**
5. **व्यक्ति और समाज**
6. **कैसा प्रभाव हुआ**
7. **विचारात्मक**

**3. विचारात्मक निबंध**: गुण , दोष , या धर्म आदि पर निबंध लेखन लिखा जाता है उसे विचारात्मक निबंध कहता है। या निबंध में किसी भी प्रकार की देखी गई यह सुनी गई बातों का वर्णन नहीं किया जा सकता। इसमें केवल कल्पना और चिंतन शक्ति की गई बातें लिख सकते हैं।

- अर्थ, परिभाषा ,भूमिका
- सार्वजनिक या सामाजिक, स्वाभाविक, कारण
- तुलना
- हानि और लाभ
- प्रमाण
- उप संहार

**निबंध लिखते समय नीचे गई बातों का ध्यान में रखें**

- निबंध में विषय पर पूरा ज्ञान होना चाहिए
- अलग-अलग प्रकार के अनुच्छेद को एक दूसरे के साथ जुड़े होना चाहिए
- निबंध की भाषा सरल होनी अनिवार्य है
- निबंध लिखे गए विषय की जितनी हो सके उतनी जानकारी प्राप्त करें
- निबंध में स्वच्छता और विराम चिन्हों पर खास ध्यान दें
- निबंध में मुहावरों का प्रयोग होना जरूरी है
- निबंध में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करें
- निबंध में आरंभ में और अंत में कविता की पंक्तियों का भी उल्लेख कर सकते हैं।

### 1. " कोरोना वायरस "

संकेत बिंदु :- 1.प्रस्तावना
2. फैलने का कारण
3. कोरोना वायरस के लक्षण
4. कोरोना वायरस से बचाव
5. उपसंहार

**सावधानी अपनाएंगे।**
**कोरोना दूर भगाएंगे।।**

**प्रस्तावना** - कोरोना एक वायरस से फैलने वाला रोग है। यह वायरस अति सूक्ष्म होता है। इसका आकार मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा होता है। इस वायरस का संक्रमण दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर में शुरू हुआ था। आज यह एक वैश्विक महामारी का रूप ले चुका है। बेश्विक महामारी अर्थात एक ही समय में पूरी दुनिया में फैलने बाली जानलेवा बीमारी है। इस तरह का वायरस पहले कभी नहीं देखा गया है इसने लोगों के जीवन को खतरे में डाल दिया है। 7 जनवरी 2020 को चीन ने वर्ड हेल्थ आर्गेनाईजेशन (W.H.O) को इस वायरस के बारे में जानकारी दी। तथा 11 मार्च 2020 को W.H.O ने इसे एक वैश्विक महामारी के रूप में घोषित किया।

फैलने का कारण - यह एक संक्रमित रोग है, तथा रोगी मनुष्य के संपर्क में आने से फैलता है। अगर संक्रमित व्यक्ति छिकता या खाँसता है या किसी चीज को छू लेता है। और दूसरा व्यक्ति भी उसी चीज को छू लेता है तो उसे भी कोरोना वायरस रोग हो जाता है। यह बिना कोई लक्षण दिखाए भी 14 दिनों तक एक्टिव हो सकता है। एक कोरोना पॉजेटिव व्यक्ति सावधानी न बरतने पर अनेक लोगों को ग्रस्त कर सकता है।

मास्क उतारकर बातें करोगें।
तो बाकी बातें अस्तपताल में करोगें।।

कोरोना वायरस के लक्षण - इस वायरस ने पुरे विश्व को तवाह कर रखा है।इस बीमारी में व्यक्ति को सबसे पहले बुखार आता है, खाँसी होती है गले में दर्द होने लगता है। साँस लेने में परेशानी होने लगती है उचित देखभाल न होने पर व्यक्ति की जान भी चली जाती है

यह वायरस बूढ़े व्यक्तियों को तथा पहले से ग्रसित बीमारी जैसे अस्थमा मधुमेह व हृदय की बीमारी वाले व्यक्तियों को बहुत जल्दी ही अपनी चपेट में लेता है।

बुखार खाँसी जुकाम, गले में खरास,साँस लेने में परेशानी,खाने में स्वाद का पता न चलना इसके प्रमुख लक्षण है।

**कोरोना वायरस से बचाव -**

सावधानी अपनाना ही कोरोना वायरस से बचाव है इसके लिए हमें समय समय पर हाथ साबुन से धोने चाहिए हैंडसेनेटाइजर का प्रयोग करना चाहिए। बाहर जाते समय मुँह पर मास्क का प्रयोग करना चाहिए। काढ़ा पीना चाहिए। बीमारी का थोड़ा सा भी संदेह होने पर तुरंत डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए व टेस्ट कराना चाहिए। शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले खादय पदार्थों व पेय पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

सावधानी हटी, बीमारी लगी।।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk8S6W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

| EXAM (परीक्षा) | DATE | हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या |
|---|---|---|
| RAS PRE. 2021 | 27 अक्तूबर | 74 प्रश्न आये |
| SSC GD 2021 | 16 नवम्बर | 68 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 30 नवम्बर | 66 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 08 दिसम्बर | 67 (100 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 14 सितम्बर | 119 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 15 सितम्बर | 126 (200 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (1st शिफ्ट) | 79 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 103 (150 में से) |

| | | |
|---|---|---|
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 91 (150 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 59 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 61 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 57 (100 में से) |
| U.P. SI 2021 | 14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट | 91 (160 में से) |
| U.P. SI 2021 | 21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट) | 89 (160 में से) |
| Raj. CET Graduation level | 07 January 2023 (1st शिफ्ट) | 96 (150 में से ) |
| Raj. CET 12th level | 04 February 2023 (1st शिफ्ट) | 98 (150 में से ) |

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/gubxrj

Online order - https://bit.ly/42AN5s2

Call करें - 9887809083